होमरूल आंदोलन - एनी बेसेन्ट और बाल गंगाधर तिलक ①

1915 में बंबई कांग्रेस में दो मुख्य बातें प्रमुख रही - पहली गांधी सब्जेक्टस कमेटी में निर्वाचित नहीं हो सके अतः अध्यक्ष द्वारा मनोनीत हुये और दूसरी ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी को लीग की कार्यकारिणी से परामर्श कर स्वशासन की योजना तैयार करने का निर्देश।

1916 के अप्रैल में तिलक की होमरूल लीग बेलगाम में हुई बंबई की क्षेत्रीय कांग्रेस में शुरू किया गया था, अबतक 6 शाखाओं में संगठित होकर महाराष्ट्र, बंबई, कर्नाटक तथा मध्य भारत और बरार तक विस्तार ले चुकी थी। तिलक ने एनी बेसेंट से पहले ही होमरूल लीग दसबिए स्थापित कर दी थी, क्योंकि वे महाराष्ट्र में अपने आधार को बनाये रखना चाहते थे। उन्होंने स्वयं भ्रमण कर होमरूल की मांग को निम्नलिखित शब्दों में स्पष्ट किया। स्वशासन हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

1 सितंबर 1916 में एनी बेसेन्ट द्वारा 'ऑल इंडिया होमरूल लीग' की स्थापना की गयी जिसे मद्रास के आडयार स्थित मुख्यालय से लगभग 200 स्थानीय शाखाओं द्वारा संचालित किया गया। बेसेंट की होमरूल लीग की सदस्य संख्या 1917 में अपने चरमोत्कर्ष पर 27,000 थी।

बेसेंट की होमरूल लीग का विस्तार और समर्थन करने वाले लोगों में प्रमुख थे - मद्रास शहर और आसपास के कस्बों के तमिल ब्राह्मण, संयुक्त प्रांत के व्यवसायिक समूह, सिंध के आमिल हिंदू अल्पसंख्यक

और गुजरात तथा बंबई के युवा गुजराती उद्योगपति, व्यापारी और वकील।

होमरूल आंदोलन का उद्देश्य था 'शांतिमय तरीके से स्वशासन प्राप्त करना'। यह एक वैधानिक संघर्ष था जो न तो युद्ध की स्थितियों में सरकार को परेशान करना चाहता था और न ही युद्ध प्रयासों में बाधा डाल रहा था बल्कि तिलक और एनी बेसेंट ने इस बात पर भारतीयों को परामर्श भी दिया था कि जर्मनी के खिलाफ सरकार की यथासंभव सहायता करें परंतु उन्होंने इस बात पर भी निरंतर बल दिया कि स्वशासित भारत इसके लिए अधिक सहायक होगा।

आंदोलन के राजनैतिक उद्देश्य के विषय में एनी बेसेंट ने अपने पत्र 'कॉमनवील' में लिखा था 'राजनैतिक सुधार से हमारा तात्पर्य परिषदों, जिला बोर्डों तथा प्रांतीय विधानसभाओं के द्वारा पूर्ण स्थानीय सरकार का निर्माण करना। इनके अधिकार स्वयं शासन करने वाले उपनिवेशों की विधान पालिकाओं के समान होंगे, चाहे इन्हीं किसी भी नाम से पुकारा जाये। इसके साथ ही, साम्राज्य की संसद में भारत का सीधा प्रतिनिधित्व होगा, जब इस संस्था में साम्राज्य के स्वयं शासन करने वाले राज्य होंगे।

एनी बेसेंट के होमरूल आंदोलन का एक और भी उद्देश्य था, पर छिपा हुआ। देश में उदारवादी नेता जनता का विश्वास खो चुके थे और उग्रवादी जो कांग्रेस से बाहर थे, उन्हें आपस में जोड़ने के लिए शांतिमय ढंग से वैधानिक आंदोलन चलाना आवश्यक था।

इस प्रकार से होमरूल आंदोलन के उद्देश्य और कांग्रेस के उदारवादियों के लक्ष्य में मुख्यतः कोई अंतर नहीं था। लेकिन इस लक्ष्य की प्राप्ति के ढंग में अवश्य अंतर था। इस आंदोलन के समर्थकों का अपने लक्ष्य को पूरा करने का तरीका उदारवादियों की भिक्षावृत्ति और याचना के ढंग का नहीं वरन् एक अधिकारपूर्ण मांग का था जैसा कि स्वयं एनी बेसेंट ने लिखा था 'भारत एक राष्ट्र की तरह साम्राज्य के राष्ट्रों के मध्य न्याय का अधिकार मांगता है - लेकिन किसी पारितोषिक के तौर पर नहीं, बल्कि अधिकार के रूप में इसकी मांग करता है।

इस प्रकार से होमरूल आंदोलन ने भारत के एक विशाल समूह में आज़ादी के अधिकार को स्पष्ट करने की कोशिश की तो जिसमें कामयाबी भी मिली लेकिन जब 1917 के अंत में एनी बेसेंट, मोंटेग्यू की उत्तरदायी सरकार संबंधी घोषणा के साथ ही ब्रिटिश राजभक्त बन गयी और अप्रैल 1920 में गांधी 'ऑल इंडिया होमरूल लीग में सम्मिलित होकर इसके अध्यक्ष बनाये गये तो बेसेंट को लीग छोड़ना हो गयी।

फिर भी यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि होमरूल का आदर्श प्राचीन था पर उसने नये प्रकाश और नयी भावनाओं के माध्यम से नये वातावरण का सृजन किया फलतः राष्ट्रीय वैधानिक आंदोलन प्रौढ़ हुआ।